



राजपत्र, हिमाचल प्रदेश

(असाधारण)

हिमाचल प्रदेश राज्य शासन द्वारा प्रकाशित

शिमला, 19 अप्रैल, 2001/29 चैत्र, 1923

हिमाचल प्रदेश विधान सभा सचिवालय

अधिसूचना

शिमला—4, 19 अप्रैल, 2001

संख्या 1—30/2001—वि०स०.—हिमाचल प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया एवं कार्य संचालन नियमावली, 1973 के नियम, 140 के अन्तर्गत “हिमाचल प्रदेश माता—पिता और आश्रित भरणफोषण विधेयक, 2001 (2001 का विधेयक

ख्याक-II) जो आज दिनांक, 19-4-2001 को हिमाचल प्रदेश विधान सभा में पुरः स्थापित हो चुका है, सर्वसाधारण की दूचनार्थ राजपत्र में मुद्रित करने हेतु प्रेषित किया जाता है।

अजय भण्डारी,
सचिव।

2001 का विधेयक संख्याक 11

**हिमाचल प्रदेश माता—पिता और आश्रित भरणपोषण विधेयक
,2001**

(विधान सभा द्वारा यथासंशोधित प्रसिद्धि)

माता—पिता, पत्नी और सन्तान तथा उनसे सम्बन्धित विषयों का उपबन्ध करने के लिए विधेयक।

उद्देशिका :— क्योंकि वृद्ध और अशक्त माता—पिता तथा आश्रितों की उपेक्षा करने की प्रवृत्ति दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है और युवा पीढ़ी को अपनी नैतिक बाध्यताओं, जो वे अपने कुटुम्ब और वृद्ध एवं अशक्त माता—पिता तथा आश्रितों के प्रति समाज के ऋणी हैं, का पालन करने हेतु उन्हें विवश करने की नितान्त आवश्यकता है ताकि वे समाज में रद्दी के ढेर की तरह कंगाल और दीनहीन न बने रहें तथा तद्वारा वे अपने जीवन निर्वाह के लिए बेसहारा जीवन जीने को प्रेरित न हों;

और भारत के संविधान के अनुच्छेद 38 के साथ पठित अनुच्छेद 41 में अधिकथित तत्त्वों को सुनिश्चित करने के प्रयोजन के लिए यह लोक हित में है कि बुढ़ापे, बीमारी और निःशक्तता तथा अन्य अनर्ह अभाव की दशाओं में लोक सहायता सुनिश्चित की जाए;

भारत गणराज्य के बावनवें वर्ष में हिमाचल प्रदेश विधान सभा द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो :—

1. (1) इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम हिमाचल प्रदेश संक्षिप्त नाम, विस्तार लागू माता—पिता और आश्रित भरणपोषण अधिनियम, 2001 है। होना और प्रारम्भ।

(2) इसका विस्तार सम्पूर्ण हिमाचल प्रदेश पर है।

(3) यह मुसलमानों के सिवाय हिमाचल प्रदेश के राज्यक्षेत्र में

अधिवसित सभी व्यक्तियों पर लागू होगा।

(4) यह उस तारीख को प्रवृत्त होगा, जो राज्य सरकार, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा नियत करे।

परिभाषाएँ।

2. इस अधिनियम में, जब तक सन्दर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हो,—

(क) "आवेदक" के अन्तर्गत ऐसा व्यक्ति भी है जिसके पक्ष में इस अधिनियम के उपबन्धों के अधीन भरणपोषण का आदेश दिया गया है;

(ख) "अनुमोदित व्यक्ति या संगठन" से ऐसा व्यक्ति या संगठन अभिप्रेत है जिसे इस के अधिनियम के प्रयोजनों के लिए राज्य सरकार द्वारा धारा 20 के अधीन अनुमोदित किया गया है और इस के अन्तर्गत अधिनियम से संलग्न अनुसूची में यथा विनिर्दिष्ट व्यक्ति और संगठन भी होंगे।

(ग) "सन्तान" के अन्तर्गत अठारह वर्ष से कम आयु की विवाहेत्तर सम्बन्ध से उत्तपन सन्तान, दत्तक और सौतेली सन्तान भी हैं;

(घ) "आश्रित" के अन्तर्गत निम्नलिखित है —

(i) माता—पिता और पितामह, पितामही, जब तक वे अपना भरणपोषण करने में असमर्थ हैं या पितामह—पितामही की दशा में अपने पुत्रों और पुत्रियों से भरणपोषण अभिप्राप्त करने में असमर्थ हैं;

(ii) पत्नी, जब तक वह पुनः विवाह न कर ले;

(iii) पुत्र या पूर्वमृत पुत्र का पुत्र जब तक वह अप्राप्तवय है; परन्तु यह तब जब कि और उस विस्तार तक जहां तक कि पौत्र की दशा, में वह अपने पिता या माता की सम्पदा से भरणपोषण अभिप्राप्त करने में असमर्थ है;

(iv) अविवाहित पुत्री या पूर्वमृत पुत्र की अविवाहित पुत्री जब तक कि वह अविवाहित रहती है; परन्तु यह तब तक कि और उस विस्तार तक जहां तक कि पौत्री की दशा में वह अपने पिता और माता की सम्पदा से भरणपोषण अभिप्राप्त करने में असमर्थ है;

(v) विधवा पुत्री ,परन्तु यह तब तक कि और उस विस्तार तक जहां तक कि वह निम्नलिखित में किसी से भरणपोषण अभिप्राप्त करने में असमर्थ है—

(क) अपने पति की सम्पदा से ; या

(ख) अपने पुत्र या पुत्री से ,यदि कोई हो ,या उसकी सम्पदा से ; या

(ग) अपने ससुर या अपने पितामह या उन दोनों में से किसी की सम्पदा से ; या

(vi) पुत्र या पूर्वमृत पुत्र के पुत्र की कोई विधवा , या जब तक कि वह पुनः विवाह न कर ले ; परन्तु यह तब तक जब कि और उस विरतार तक जहां तक कि वह अपने पति की सम्पदा रो या अपने पुत्र या पुत्री से अथवा, यदि कोई हो, या उसकी सम्पदा; या पौत्र की विधवा की दशा में , अपने ससुर की सम्पदा से भरणपोषण अभिप्राप्त करने में असमर्थ है;

(vii) विवाहेत्तर सम्बन्ध से उत्पन्न पुत्र, जब तक कि वह अप्राप्तवय रहता है;

(viii) विवाहेत्तर सम्बन्ध से उत्पन्न पुत्री, जब तक वह अप्राप्तवय रहती है;

(ड.) “भरणपोषण अधिकारी” से, धारा 13 के अधीन माता—पिता और आश्रितों के भरणपोषण के लिए नियुक्त, भरणपोषण अधिकारी अभिप्रेत है;

(च) “विहित” से इस अधिनियम के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा विहित अभिप्रेत है;

(छ) “सम्पति” से किसी भी प्रकार की सम्पत्ति, चाहे जंगम या रथावर ,मूर्त या अमूर्त, अभिप्रेत है और ऐसी सम्पति में कोई अधिकार या हित भी इसके अन्तर्गत हैं;

(ज) “प्रत्यर्थी” के अन्तर्गत ऐसा व्यक्ति भी है जिसके विरुद्ध इस अधिनियम के

उपबन्धों के अधीन भरणपोषण का आदेश दिया गया है ; और (ज) "अधिकरण" से धारा 14 के अधीन स्थापित माता-पिता और आश्रितों के

भरणपोषण के लिए अधिकरण अभिप्रेत है।

भरणपोषण आदेश
के लिए आवेदन।

3. (1) कोई व्यक्ति ,जो अपना भरणपोषण करने में असमर्थ है ,
जिसकी आय गरीबी रेखा से नीचे रह रहे व्यक्तियों के लिए
अधिकथित स्तर रो नीचे है तथा और हिमाचल प्रदेश राज्य का
निवारी है , -

(i) माता-पिता या पितामह-पितामही की दशा में ,उसके एक या
अधिक सन्तान या पौत्र-पौत्री ;

(ii) पत्नी की दशा में —उसका पति ;

(iii) अप्राप्तवय पुत्र या अविवाहित पुत्री की दशा में , उसका
पिता और जहां पिता की मृत्यु हो चुकी है उसकी माता ; और

(iv) माता-पिता, पितामह-पितामही, पत्नी ,अप्राप्तवय पुत्र या
अविवाहित पुत्री से भिन्न आश्रित की दशा में यदि ऐसे
आश्रित ने अपने पूर्वज की सम्पदा में कोई भाग वसीयती या
निर्वसीयती उत्तराधिकार द्वारा अभिप्राप्त नहीं किया है—वह
व्यक्ति जो भाग लेता है;

से अपने भरणपोषण के लिए मासिक भत्ता प्रतिमास पांच हजार
रुपये से अनधिक या कोई अन्य कालिक संदाय या एकमुश्त उसे
संदत्त करने के आदेश के लिए अधिकरण को आवेदन कर
सकेगा।

(2) अनुमोदित व्यक्ति या संगठन जिसकी देख-रेख में
माता-पिता, सन्तान या आश्रित रहता है ,आदेश के लिए
अधिकरण को आवेदन कर सकेगा कि ,यथास्थिति
माता-पिता,पत्नी ,सन्तान या आश्रित के भरणपोषण के खर्च
और व्यय चुकाने के प्रयोजन के लिए प्रत्यर्थी ,अनुमोदित व्यक्ति
या संगठन को प्रतिमास पांच हजार रुपये से अनधिक मासिक

भत्ता या कोई अन्य कालिक या एकमुश्त संदायःसंदत्ता करेगा ।

(3) जहां माता—पिता , पत्नी , सन्तान या आश्रित अनुमोदित व्यक्ति या संगठन की देख—रेख में नहीं रहता है, वहां ,उक्त माता—पिता ,पत्नी , सन्तान और आश्रित के भरणपोषण के युक्तियुक्त खर्च और व्यय काटने के पश्चात्,मासिक भत्ता अन्य कालिक या मुश्त संदाय के शेष को; कीई भाग, यथास्थिति ऐसे माता—पि ।,पत्नी, सन्तान और आश्रित के लिए न्यास के रूप में रखा जाएगा ।

स्पष्टीकरण:—इस धारा के प्रयोजन के लिए,माता—पिता अपना भरणपोषण करने में असमर्थ समझे जाएंगे यदि उनकी कुल या प्रत्याशित आय और अन्य वित्तीय स्रोत उन्हें रोटी,कपड़ा और मकान सहित (किन्तु वहां तक सीमित न रह कर) बुनियादी सुख—सुविधाएं और बुनियादी शारीरिक आवश्यकताओं की व्यवरथा करने के लिए अपर्याप्त हैं ।

प्रत्यर्थीयों का संयोजन । 4. प्रत्यर्थी विहित प्ररूप में अन्य व्यक्तियों , जो आवेदक के भरणपोषण के लिए दायी हों , को प्रत्यर्थी के रूप में शामिल करने के लिए नोटिस तामील कर सकेगा ।

भरणपोषण आदेश । 5. (1) अधिकरण भरणपोषण आदेश कर सकेगा यदि यह उचित समझता है कि यह न्यायसंगत तथा साम्यापूर्ण है कि प्रत्यर्थी को आवेदक का भरणपोषण करना चाहिए और यह कि—
(क) प्रत्यर्थी उसकी अपनी आवश्यकताओं और उसके पाति या पत्नी और

उसकी सन्तान के पश्चात् आवेदक के भरणपोषण की व्यवरथा करने में

समर्थ है ; और

(ख) आवेदक अपने प्रयास के बाबजूद, काम करके अपनी सम्पत्ति या किसी

अन्य रोत्र से अपना भरणपोषण करने गें असमर्थ है ।

(2) जब पत्नी ,सन्तान या वृद्ध या अशक्त माता—पिता की प्रसुविधा के लिए भरणपोषण के आदेश करते हुए अधिकरण निम्नलिखित विषयों सहित (परन्तु उस तक सीमित नहीं) मामले की समस्त परिस्थितियों को ध्यान में रखेगा –

(क) आवास और चिकित्सा के लिए युक्तियुक्त व्यय के दृष्टिगत आवेदक की वित्तीय आवश्यकताएं ;

(ख) आवेदक की आय,उपार्जन सामर्थ्य, सम्पत्ति और अन्य वित्तीय स्रोत और जिस ढंग से आवेदक ने अपनी वचत का व्यय किया है या अपने वित्तीय स्रोत अपव्यय किए हैं ;

(ग) आवेदक की शारीरिक या मानसिक निःशक्तता ;

(घ) प्रत्यर्थी की आय ,उपार्जन सामर्थ्य,सम्पत्ति और अन्य वित्तीय स्रोत ;

(ङ) प्रत्यर्थी द्वारा अपने पति या पत्नी या सन्तान के सहायतार्थ उपगत व्यय;

(च) अंशदान और व्यवस्थाएं,चाहे ठिल्लीय वा अन्यथा हों,जो प्रत्यर्थी ने आवेदक के लिए की हैं ; और

(छ) यदि आवेदक पृथकतः निवास कर रहा हो , तो क्या आवेदक का ऐसा करना न्यायोचित है ।

(3) आश्रित की प्रसुविधा के लिए भरणपोषण का आदेश करते हुए (पत्नी, अप्राप्तवय पुत्र, अविवाहित पुत्री और माता—पिता से भिन्न) निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाएगा—

(क) मृतक के क्रृणों के संदाय का उपबन्ध करने के पश्चात् उसकी सम्पत्ति के शुद्ध मूल्य का ;

(ख) मृतक की वसीयत के अधीन आश्रित के बारे मे किए गए उपबन्ध ,यदि कोई हो ;

(ग) दोनों के बीच नातेदारी ;

(घ) आश्रित की युक्तियुक्त आवश्यकताएं ;

(ङ) आश्रित और मृतक के बीच पूर्व सम्बन्ध ;

(च) आश्रित की सम्पत्ति के मूल्य और ऐसी सम्पत्ति से प्राप्त कोई आय या उसकी या उसके किसी अन्य स्रोत स्वतन्त्र आय ; और

(छ) इस अधिनियम के अधीन भरणपोषण के हकदार आश्रितों की संख्या ।

(4) अधिकरण, जहां एक से अधिक प्रत्यर्थी हों, भरणपोषण को विभिन्न प्रत्यर्थियों में ऐसी रीति में प्रभाजित कर सकेगा जैसा कि न्यायसंगत हो ।

(5) अधिकरण इस धारा के अधीन आवेदन की सुनवाई से पूर्व पक्षकारों के बीच मतभेदों को ,पक्षकारों के बीच मध्यस्थता के लिए सुलह अधिकारी को निर्दिष्ट कर सकेंगा ।

6. जहां इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाही में अधिकरण को यह प्रतीत होता है कि आवेदक अपना भरणपोषण करने में असमर्थ रहता है और उसकी कोई स्वतन्त्र आय नहीं है तो वह शपथपत्र से समर्थित आवेदक के आवेदन पर प्रत्यर्थी की आय को ध्यान में रखते हुए , प्रत्यर्थी को अन्तरिम भरणपोषण के रूप में , भरणपोषण आवेदन के अनितम निपटारे ते नमित रहने के दौरान आवेदक को ऐसी राशि संदत्त करने का आदै।। दे सकेगा जो अधिकरण को युक्तियुक्त प्रतीत हो परन्तु जो पांच सौ रु० प्रतिमास से कम नहीं होगी ।

7(1) भरणपोषण आदेश मे, मासिक भत्ते, जो प्रतिमास पांच। हजार रु० से अधिक न हो, या कालिक सदांय या एक मुशात राशि के संदाय का, ऐसी अवधि के लिए जिसे अधिकरण अवधारित कर सकेगा, उपबन्ध हो सकेंगा ।

(2) अधिकरण स्वविवेकानुसार भरणपोषण अधिनिर्णीत करते हुए प्रत्यर्थी को इसके पूर्णतः या अंशतः भाग को प्रतिभूत करने के लिए न्यास पर न्यासियों में काई सम्पत्ति निहित करते हुए उस सम्पत्ति की आय से से भरणपोषण या उसके भाग को ,संदत्त

वादकालीन भरणपोषण ।

भरणपोषण के लिए सुरक्षा का आदेश देने की अधिकरण की शक्ति

करने का आदेश दे सकेगा ।

(3) अधिकरण भरणपोषण अधिनिर्णीत करते हुए आवेदक को –

(क) ऐसी न्यूनतम राशि हो अधिकरण बैंक के साथ नियत करे, जमा करने; या

(ख) ऐसी न्यूनतम राशि से बीमाकर्ता के साथ वार्षिकी का क्य करने का आदेश दे सकेगा ।

(4) अधिकरण, भरणपोषण अधिनिर्णीत करते हुए, संदाय की रीति और ढग के निर्देश दे सकेगा ।

भरणपोषण के लिए आदेश की कालावधि ।

8 (1) सिवाय जहां भरणपोषण के लिए आदेश किसी लघुतर अवधि के लिए अभिव्यक्त किया हो, या जहां ऐसा आदेश विखंडित किया जा चुका हो, भरणपोषण आदेश समाप्त हो जाएगा –

(क) यदि भरणपोषण आवेदक या प्रत्यर्थी की मृत्यु पर जो पूर्वतः हो, अप्रतिभूत था;

(ख) यदि भरणपोषण आवेदक की मृत्यु पर प्रतिभूत था ।

(2) जहां भरणपोषण आदेश एक से अधिक प्रत्यर्थी के विरुद्ध किया गया था वहां प्रत्यर्थी की मृत्यु, आवेदक के भरणपोषण करते रहने के अन्य व्यक्तियों के दायित्व को प्रभावित नहीं करेगी । आवेदक, अधिकरण को उत्तरजीवी प्रत्यर्थियों के बीच दायित्व के पुनः प्रभाजन के लिए आवेदन कर सकेगा ।

भरणपोषण के लिए आदेशों को परिवर्तित वाले की अधिकरण की शक्ति ।

9,(1) अधिकरण, भरणपोषण के लिए किसी विद्यमान आदेश को चाहे प्रतिभूत या अप्रतिभूत हो, परिवर्तित या विखंडित कर राकेगा, जहां यह समाधान हो जाता है, कि आदेश किसी दुर्व्यपदेशन या तथ्य की भूल या जहां आवेदक या प्रत्यर्थी की परिस्थितियों में हानिकारक तदनीतियां हुई हों, पर आधारित हों या जहां अन्य व्यक्ति प्रत्यर्थी के रूप में शामिल हुआ हो ।

(2) भरणपोषण के आदेश में फेरफार के लिए आवेदन निम्न द्वारा किया जा सकेगा –

- (क) आवेदक ;
- (ख) प्रत्यर्थी ;
- (ग) भरणपोषण अधिकारी ;
- (घ) धारा 3 (2) में निर्दिष्ट अनुमोदित व्यक्ति या संगठन या
- (ङ.) प्रतिभूत भरणपोषण के बारे में प्रत्यर्थी के विधिक व्यैक्तिक प्रतिनिधि ।

(3) जहां भरणपोषण आदेश एक से त्यर्थी के विरुद्ध किया गया था या अन्य प्रत्यर्थी शामिल हा गया है वहां अधिकरण भरणपोषण आदेश में परिवर्तन करने के आवेदन पर ऐसी रीति में जैसा वह न्यायोजित समझ, भरणपोषण का पुनः प्रभाजन कर सकेगा ।

अधिकरण के आदेश के अधीन संदेय भरणपोषण के अन्य परिवर्तन के बारे में, समनुदेशीय या अंतरणीय या कुर्क, जब्त या उद्गृहीत किए जाने का दायीं, नहीं होगा ।

का अन्य—
असंकास्य
होना ।

o

भरणपोषण आदेशों का प्रवर्तन ।

11.(1) इस अधिनियम के अधीन किया गया भरणपोषण आदेश 1974 का 2 का वही बल और प्रभाव होगा जैसा कि दण्ड प्रक्रिया संहिता 1973 के अध्याय 9 के अधीन पारित आ न्ना होगा और उसी संहिता द्वारा ऐसे आदेश के निष्पादन के विहित रीति में निष्पादेत किया जाएगा ।

(2) भरणपोषण के लिए आदेश या तो उसी अधिकरण द्वारा जिसने इसे पारित किया हो या अन्य अधिकरण या साधारण न्यायालय जिसमें निष्पादन के लिए भेजा गया हो, निष्पादित किया जा सकेगा ।

(3) उप-धाराएं (1) और (2) में निर्दिष्ट निष्पादन आदेशों के द्वागे के अतिरिक्त, किसी व्यक्ति, जो किसी राज्य या केन्द्रीय सरकार अथवा किसी स्थानीय प्राधिकारी या किसी व्यापार या उद्योग में लगे किसी निगम से जो केन्द्रीय या

राज्य सरकार द्वारा स्थापित किया गया हो अथवा कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 617 में यथापरिभाषित किसी सरकारी कम्पनी से वेतन प्राप्त कर रहा है, के विरुद्ध पारित भरणपोषण आदेश उसे संदेय वेतन की कुर्की द्वारा निष्पादित किया जा सकेगा।

1956 का 1

(4) जहां वेतन उप-धारा (3) के अधीन कुर्की किया जाता है, अधिकरण, चाहे भरणपोषण की 'फ़िनर्स' दत्त करने के लिए दायी व्यक्ति या नियोजक अथवा वेतन का संवितरण करने वाला अधिकारी अधिकरण की अधिकारिता की स्थानीय सीमाओं के भीतर है या नहीं, यह आदेश कर सकेगा कि ऐसे वेतन से मासिक किस्तों द्वारा एक-तिहाई से अनधिक वेतन, जैसा अधिकरण निर्दिष्ट करे, विधारित किया जाएगा और आदेश की सूचना हो जाने पर ऐसा नियोजक या संवितरक अधिकारी मासिक किस्तों की रकम अधिकरण के पास भेजेगा।

(5) जहां ऐसे वेतन के कुर्की योग्य भाग, कुर्की के पूर्वतन और अतुष्ट आदेश के अनुसरण में पहले ही विधारित और न्यायालय या अधिकरण के पास भेजा जा रहा है, वहां नियोजक और संवितरक अधिकारी पश्चात् वर्ती आदेश को तत्काल उस अधिकरण को जिसने उसे निकाला है, विद्यमान कुर्की की सभी विशिष्टियों के पूरे कथन के सहित लौटा देगा।

(6) उप-धारा (3) के अधीन किया गया हर आदेश जब तक कि वह उप-धारा (5) के अपवन्द्ये अनुसरण में लौटा न दिया जाए, अतिरिक्त सूचना या अन्य ... शका के बिना नियोजक को आवद्ध करेगा और नियोजक इस धारा की उप-धाराओं (3), (4)

और (5) के उपबन्धों के उल्लंघन में संदत्त की गई राशि के लिए दायी होगा।

12. जहां आवेदक इस अधिनियम के अधीन आवेदन करने में असमर्थ आवेदकों की ओर असमर्थ है (चाहे शारीरिक या मानसिक शैथिल्य या अन्य किसी से आवेदन। कारण से) वहां ऐसा आवेदन उसकी ओर से निम्न द्वारा किया जा सकेगा।

(क) कुटुम्ब के किसी सदस्य द्वारा;

(ख) किसी व्यक्ति जिसकी देख-रेख में वह रहता हो; या

(ग) अन्य कोई व्यक्ति जिसे आवेदक ने भेज करने के लिए प्राधिकृत किया हो

(घ) भरणपोषण अधिकारी

13.(1) सम्बन्धित जिला कल्याण अधिकारी, माता-पिता और भरणपोषण अधिकारी आश्रितों के भरणपोषण के लिए, अपनी क्षेत्रीय अधिकारिता के भीतर, भरणपोषण अधिकारी होगा।

(2) भरणपोषण अधिकारी, आवेदक या अप्राप्तवय सन्तान (चाहे आवेदक ऐसा करने में समर्थ हो या न हो) की ओर से आवेदन कर सकेगा या इस अधिनियम के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों का इस अवधि में व्यपदेशन कर सकेगा।

(3) भरणपोषण अधिकारी अपने अधिकारियों में से किन्हीं अधिकारियों, को सम्बन्धित पक्षकारों से उनकी सहायता के लिए सुलह द्वारा करार करने के लिए परामर्श या निदेश दे सकेगा।

14.(1) सरकार इस अधिनियम द्वारा माता-पिता और आश्रितों के भरण-पोषण के लिए अधिकरण को प्रदत्त अधिकारिता और शक्तियों का प्रयोग करने के प्रयोजन के लिए इस अधिनियम के प्रारम्भ के पश्चात् यथाशक्यशीघ्र प्रत्येक जिते ने और ऐसे स्थानों पर माता-पिता आश्रितों के भरणपोषण के लिए अधिकरण रथापित कर सकेगी, जो सरकार अधिसूचना द्वारा बिनिर्दिष्ट करे।

(2) ऐसे अधिकरणों के पीठासीन अधिकारी राज्य सरकार द्वारा

माता-पिता और आश्रितों के भरणपोषण के लिए अधिकरण की स्थापना।

नियुक्त किए जाएंगे जो उपमण्डलाधिकारी (सिविल) की पंक्ति से नीचे के नहीं होंगे।

(3) अधिकरण का पीठासीन अधिकारी अपना पद रिक्त कर देगा जहां—

(क) वह पद रो त्यागपत्र दे देता है ; र.

(ख) जहां उसकी नियुक्ति किसी पद धारण के फलस्वरूप की जाती है, वह उस पद पर नहीं रहता है।

(4) जहां व्यक्ति अधिकरण का पीठासीन अधिकारी नहीं रहता है वहां राज्य सरकार युक्तियुक्त रूप में यथासाध्य शीघ्रता से रिक्ति को भरने के लिए पग उठाएगी, किन्तु अधिकरण में कोई रिक्ति अधिकरण के कार्यों को अविधिमान्य नहीं करेगी।

(5) यदि अधिकरण का पीठासीन अधिकारी तत्समय अपने पद के या तो साधारणतया या विशिष्ट कार्यवाहियों से सम्बन्धित कर्तव्यों को अनुपालन करने में असमर्थ हो तो राज्य सरकार कार्यवाहियों से सम्बन्धित, यथास्थिति, किसी व्यक्ति को एक समय में छः मास से अनधिक अवधि के लिए पीठासीन अधिकारी के कर्तव्यों का पालन करने के लिए नियुक्त कर सकेगी और इस प्रकार नियुक्त व्यक्ति की, उस अवधि के दौरान या उन कार्यवाहियों से सम्बन्धित वही शक्तियां होंगी जैसे उस व्यक्ति की हैं जिसके रथान पर उसे नियुक्त गा गया है।

(6) अधिकरण का पीठासीन अधिकारि तक अधिकरण में सेवारत है भारतीय दण्ड संहिता 1860 के अर्थ के अन्तर्गत लोक सेवक समझा जाएगा और अधिकरण की कार्यवाहियां न्यायिक कार्यवाहियां समझी जाएंगी।

अधिकरण 15.(1) अधिकरण को, इस अधिनियम के अधीन किए गए सभी द्वारा दावों का आपेदनों को इस अधिनियम के अनुसार, रुनने और अवधारित सुना और करने की अधिकारिता होगी।

अवधारित (2) अधिकरण, उसे किए गए प्रत्येक आवेदन को यथाशक्य शीघ्र किया जाना। विनिश्चित करेगा और राधारणतया प्रत्येक आवेदन को, इसके

किए जाने की तारीख से छः मास की अवधि के भीतर विनिश्चित करेगा।

(3) अधिकरण की बैठकें ऐसे स्थानों और समय पर होंगी जैसे अधिकरण का पीठासीन अधिकारी अवधारित करे।

(4) किसी हितबद्ध पक्षकार का निम्नलिखित द्वारा अधिकरण के समक्ष प्रतिनिष्ठित किया जा सकेगा—

(क) किसी माँ में, फीस, लाभ, पानि : या किसी प्रत्याशा के बिना कार्यश्वरूप हुए, जिसमें अधिकरण पक्षकार की प्रार्थना पर और ठोस कारण से अनुज्ञा दे सकेगा— किसी अभिकर्ता;

(ख) भरणपोषण अधिकारी;

(ग) यदि वह अनुमोदित व्यक्ति या संगठन हैं तो अनुमोदित व्यक्ति या संगठन का अधिकारी या कर्मचारी।

(5) अधिकरण के समक्ष किन्हीं कार्यवाहियों में किसी भी पक्षकार का प्रति-निधित्व अधिवक्ता द्वारा नहीं किया जाएगा।

(6) अधिकरण के पीठासीन अधिकारी के हस्ताक्षराधीन किसी व्यक्ति को जारी किया गया प्रत्येक समन या नोटिस उस व्यक्ति पर निम्न प्रकार से तामील किया जाएगा—

(क) व्यक्ति या उसके परिवार के किसी वयस्क सदस्य को उसके अंतिम ज्ञात निवास-स्थान पर समन द्वारा;

(ख) उसके सामान्य या अन्तिम ज्ञात निवास-स्थान या कारबार के स्थान पर उस व्यक्ति को सम्बोधित लिफाफे में समन छोड़कर;

(ग) उसके रामान्य या अन्तिम ज्ञात निवास-स्थान या कारबार के स्थान पर उस व्यक्ति को सम्बोधित रजिस्ट्रीकूट डाक द्वारा समन भेज कर; या

(घ) जहां व्यक्ति, व्यक्तियों का निकाय या कम्पनी हो—

(ज) व्यक्तियों के निकाय या कम्पनी या सचिव या अन्य उसी

प्रकार के अधिकारी को , रजिस्ट्रीकृत कार्यालय या कारबाह के मुख्य स्थान पर समन परिदत्त करके ; या

(ii) व्यक्तियों के निकाय या कम्पनी - रजिस्ट्रीकृत कार्यालय या कारबाह के मुख्य स्थान को सम्बोधित करके रजिस्ट्रीकृत डाक से समन भेज कर ,तामील किया जा सकेगा ।

(7) उप-धारा (6) के अनुसार रजिस्ट्रीकृत डाक द्वारा , भेजे गए कोई समन या नोटिस व्यक्ति को , सम्यक रूप से तामील किए गए समझे जाएंगे ,जब पत्र साधारण डाक द्वारा पहुंच गया होता और समन की तामील साबित करने के लिए ,यह साबित करना पर्याप्त होगा कि समन उचित तौर से स्टांपित और रजिस्ट्रीकृत डाक द्वारा भेजे गए थे ।

(४) अधिकरण का नेट्वर्किंग शक्तियां होगी –

(क) शपथ-पत्रों और अन्य दस्तावेजी साक्ष्य के आधार पर पुर्ख और तंग करने वाले दावों को ,प्रारम्भिक अवरथा में ,खारिज करना ;

(ख) किसी व्यक्ति को सुलह अधिकारी के समक्ष ,मध्यरथता के प्रयोजन से समन करना ;

(ग) किसी व्यक्ति को जिसे यह योग्य समझे , आवेदन की सुनवाई में साक्ष्य देने के लिए समन

(घ) ऐसे व्यक्ति का साक्षी के रूप में शपथ पर या अन्यथा परीक्षण करना और ऐसे व्यक्ति से ऐसे अभिलेख ,दस्तावेज या वस्तुएं जो अधिकरण कार्यवाहियों के प्रयोजन के लिए आवश्यक समझे ,पेश करने की आपेक्षा करना ;

(ङ.) किसी व्यक्ति को कार्यवाहियों में हाजिर होने के लिए अनुज्ञात करना , उस द्वारा ऐसे हाजिर होने के लिए उपगत आवश्यक व्यय को ऐसे पक्षकार द्वारा संदत्त कराना जो अधिकरण अवधारित करे ;

(च) पक्षकारों की राहमति द्वारा आदेश करना ; और

(7) साक्षियों को हाजिर कराने और शपथ पर साक्ष्य सुनने के विषय में मजिस्ट्रेट की सभी शक्तियां।

(8) अधिकरण द्वारा या के समक्ष साक्षी के रूप में परीक्षित प्रत्येक व्यक्ति, सत्य बोलने और ऐसे अभिलेख, दस्तावेज या वस्तुएं, जिसे अधिकरण अपेक्षा करे, पेश करने के लिए वैध रूप से आबद्ध होगा।

(9) अधिकरण, साक्ष्य के रूप में कोई रिपोर्ट, कथन, दस्तावेज, जानकारी या बात जो उसकी राय में इसे विवाद पर प्रभावी रूप से विचार करने में सहायक हो, चाहे वह अन्यथा भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 के अधीन सुरक्षित या ग्राह्य न हो, ग्रहण कर 1872 का 1 सकेगा।

(10) अधिकरण के समक्ष कार्यवाहियों में साक्षियों का विस्तरित साक्ष्य अभिलिखित करना आवश्यक नहीं होगा, किन्तु अधिकरण जैसे जैसे प्रत्येक साक्षी की परीक्षा होती जाती है, साक्षी जो अधिसाक्ष्य देता है के सार का ज्ञापन अभिलिखित करेगा या करवाएगा और ऐसा ज्ञापन साक्षी द्वारा और अधिकरण के पीठासीन अधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित किया जाएगा और अभिलेख का भाग होगा।

(11) किसी व्यक्ति का साक्ष्य, जहां ऐसा साक्ष्य औपचारिक प्रकार का है, को शपथ-पत्र द्वारा किया जा सकेगा और अधिकरण के समक्ष किसी कार्यवाही में, साक्ष्य में सभी अपवादों के अध्यधीन होगा।

(12) अधिकरण, यदि वह ठीक समझे, कार्यवाहियों में पक्षकारों में से किसी एक के आवेदन पर ऐसे किसी व्यक्ति को, जो उसके शपथ-पत्र में अन्तर्विष्ट तथ्यों के लिए है, समन करेगा और उसकी परीक्षा करेगा।

राज्य सरकार अधिकरण की कार्यपालियों को मंगवा सकेगी। 16. (1) राज्य सरकार, स्वप्रेरणा से या अधिकरण के विनिश्चय से व्यथिता किसी पक्षकार के आवेदन पर चौंदह दिन के भीतर, इस आधार पर यि यह पिणि की दृष्टि में तोषपूर्ण है कार्यवाहियों और अधिनिर्णय के आधारों को मंगवा सकेगा और उस पर या नई सुनवाई निर्दिष्ट करते हुए या ऐसे आदेश देगा जो यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक प्रतीत हो कि पर्याप्त न्याय हुआ है।

(2) इस धारा के अधीन प्रदत्त पुनरीक्षण की शक्तियाँ इस अधिनियम के अधीन प्रदत्त या प्रभाजित भरणपोषण की मात्रा के बारे में अधिकरण के विनिश्चय को प्रश्नगत नहीं करेगी।

अपीलें। 17.(1) इस धारा और धारा 16 में अन्यथा उपबन्धित के सिवाय अधिकरण का विनिश्चय अन्तिम होगा।

(2) आवेदक, आवेदक की ओर से भरणपोषण अधिकारी, प्रत्यर्थी, अनुमोदित व्यक्ति या संगठन या कोई अन्य प्रभावित पक्षकार अधिकरण के विनिश्चय से, किसी विधि या मिश्रित विधि के प्रश्न या तथ्य पर जिला एवं सत्र न्यायाधीश को अपील कर सकेगा, सिवाय ऐसे किसी मामले में जहां अधिकरण ने आदेश पक्षकारों की सहमति से किया हो जब तक कि यह अभिकथित न हो कि सहमति कपट विबाध्यता, धमकी या दुर्ब्यपदेशन द्वारा अभिप्राप्त न की गई हो।

(3) जिला एवं सत्र न्यायाधीश नी गई प्रत्येक अपील को यथाशक्त शीघ्र विनिश्चित करेगा।

(4) उप-धाराएं (2) और (3) के अधीन ऐसी अपीलों को विनियमित करने वाली प्रक्रिया वही होगी जो जिला न्यायालय के विनिश्चित से उच्च न्यायालय को की गई अपीलों के लिए है।

(5) जिला एवं सत्र न्यायाधीश को ऐसी किसी अपील को सुनने और अवधारित करने की अधिकारिता होगी और अपील पर अधिकरण के विनिश्चय को पुष्ट, परिवर्तित या बातिल कर सकेगा और ऐसी अपील पर खर्च की बाबत या अन्यथा ऐसा अगला या अन्य आदेश

कर सकेगा जैसा जिला एवं सत्र न्यायाधीश ठीक समझे।

(6) जिला एवं सत्र न्यायाधीश के विनिश्चय से अपील का अतिरिक्त अधिकार नहीं होगा।

18. इस अधिनियम के अधीन—

खर्च।

(क) आवेदन का खर्च, अधिकरण के ; और

(ख) अपील की सुनवाई का खर्च जिला एवं सत्र न्यायाधीश के स्वविवेकानुसार होगा।

19.(1) जहां किसी व्यक्ति ने इस अधिनियम के प्रारम्भ के पश्चात् भरणपोषण के अधिकार पर अपनी सम्पत्ति दान द्वारा या अन्यथा इस शर्त के अधीन अन्तरित की है कि अन्तरिति, अन्तरक को आधारभूत सुखसुविधाएं और आधारभूत शारीरिक आवश्यकताएं उपलब्ध करवाएगा और ऐसा अन्तरिति ऐसी सुखसुविधाओं और शारीरिक आवश्यकताओं को उपलब्ध करवाने से इन्कार करता है या उपलब्ध करवाने में असफल रहता है तो उक्त सम्पत्ति का अन्तरण कपट या प्रपीड़न या अनुचित प्रभाव के अधीन किया गया समझा जाएगा और अन्तरक के विकल्प पर शून्य होगा।

(2) जहां किसी व्यक्ति को किसी सम्पदा में से भरणपोषण प्राप्त करने का अधिकार है, और ऐसी सम्पदा या कोई भाग अन्तरित किया जाता है तो यदि अन्तरिति को उस अधिकार की सूचना है यों यदि व अन्तरण अनुग्रहिक है तो भरणपोषण प्राप्त करने के अधिकार का प्रवर्तन अन्तरिति के विरुद्ध करवाया जा सकेगा किन्तु ऐसे अन्तरिति के विरुद्ध नहीं जो सप्रतिफल अन्तरिति है और जिसे उस अधिकार की सूचना नहीं है।

20. राज्य सरकार—

अनुमोदित व्यक्ति या

(क) सामाजिक कल्याण में रत संस्थानों या संगठनों या उनके संगठन प्रतिनिधियों को;

(ख) परिवार कल्याण की अभिवृद्धि में रत व्यवसायिक व्यक्तियों को;

(ग) सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों को ; और

(घ) किसी अन्य व्यक्ति को ;

जिनका अधिकरण से सहयोजन इसे इस अधिनियम के प्रयोजनानुसार इसकी अधिकारिता को अधिक प्रभावित ढंग से अमल में लाने हेतु उसे सशक्त करेगा , अनुमोदित कर सकेगी ।

उपबन्ध

21. इस अधिनियम के उपबन्ध , दण्ड प्रक्रिया संहिता , 1973 के अध्याय 9 (पत्नी , सन्तान और माता-पिता के भरण-पोषण के आदेश से सम्बन्धित) और भरणपोषण के बाद या कार्यवाही के बारे में तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के उपबन्धों के अतिरिक्त होंगे , न कि उनके अल्पीकरण में ।

करियम बनाने की शक्ति ।

22. (1) राज्य सरकार , पूर्व प्रकाशन की शर्त के अध्यधीन इस अधिनियम के उपबन्धों के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम बना सकेगी ।

(2) पूर्ववर्ती शक्तियों की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना , ऐसे नियम निम्नलिखित के लिए उपबन्ध कर सकेंगे —

(क) इस अधिनियम के अधीन आवेदनों और कार्यवाहियों के संचालन के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रिया को विनियमित और विहित करने के लिए ;

(ख) उन साधनों , जिनके द्वारा विशिष्ट तथ्यों को साबित किया जा सके और ढंग जिसके द्वारा उनके साक्ष्य (जिसके अन्तर्गत शपथ-पत्र भी है), किन्तु केवल इस तक सीमित नहीं) को विनियमित और विहित करने के लिए ;

(ग) रीति जिसमें तुच्छ या तंग करने वाले दावे प्रारम्भिक अवस्था में शपथ-पत्र और अन्य दरस्तावेजी साक्ष्य के आधार पर खारिज किए जा सकें ;

(घ) दरस्तावेजों और अन्य साक्ष्य और लोक अभिलेखाओं का प्रकटीकरण ;

(ङ.) इस अधिनियम के अधीन अधिनिर्णीत भरणपोषण के संदाय

की रीति और पद्धति ;

(च) इस अधिनियम के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों के खर्च ; और
 (छ) अधिकरण को सहायता देने के लिए रीति जिसमें , प्रयोजन
 जिसके लिए , और शर्तें जिनके अन्तर्गत संरथानों , संगठनों और
 अन्य व्यक्तियों को , अनुमोदित किया जा सके ।

(3) इस धारा के अधीन राज्य सरकार द्वारा बनाया गया प्रत्येक
 नियम , बनाए जाने के पश्चात् , यथाशीघ्र राज्य विधान सभा के
 समक्ष , जब वह सत्र में हो , कुल चौदह दिन की अवधि के लिए
 रखा जाएगा । यह अवधि एक सत्र में अथवा दो या अधिक
 आनुकूलिक सत्रों में पूरी हो सकेगी । यदि उस सत्र के या पूर्वोक्त
 आनुकूलिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसरान के पूर्व विधान
 सभा उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए तहमत हो जाए
 सहमत हो जाए तो तत्पश्चात् वह ऐसे परिवर्तित रूप में ही प्रभावी
 होगा । यदि उक्त अवसरान के पूर्व विधान सभा सहमत हो जाए कि
 वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात् वह निष्प्रभाव
 हो जाएगा । किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निष्प्रभाव होने से
 उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर
 प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

अनुसूची
(धारा 2 (ख) देखिए)

वृद्ध ,दुर्बल और आश्रित व्यक्तियों को स्वने या भरणपोषण करने में
लगे हुए व्यक्ति या संगठन की सूची।

1. हिमाचल प्रदेश शिशु कल्याण परिषद्, शिमला -2
2. राज्य सामाजिक कल्याण सलाहकार बोर्ड , हिमाचल प्रदेश , खलीनी,
शिमला-2
3. बल्ह घाटी कल्याण सभा, भंगरोटू, तहसील सदर, जिला मण्डी, हिमाचल
प्रदेश ।
4. भारत में सामाजिक स्वास्थ्य संगम, कैग गार्डन, कोठी सं0 3, शिमला-2
5. ऐज केयर इडिया, हिमाचल प्रदेश चैप्टर, ओंकार हाऊस, कुसुम्पटी,
शिमला-9
6. इंदिरा लेडीज क्लब, राऊजोर पैलेस, नाहन, जिला सिरमौर, हिमाचल
प्रदेश ।
7. सिर्टर्ज ऑप चैरिटी, प्रेम आश्रम, ऊना, जिला ऊना, हिमाचल प्रदेश ।

उद्देश्यों और कारणों का कथन

हमारे समाज में वृद्ध माता-पिता का भरणपोषण एक महत्वपूर्ण विषय होने के साथ-साथ सम्बधों की विद्यमानता से उत्पन्न निजी नैतिक दायित्व तथा किसी सम्पत्ति, चाहे वह पैतृक हो या अर्जित हो से सर्वथा स्वतन्त्र अधिकार का विषय रहा है।

वर्तमान में, गरे संविधान निर्माताओं ने बुढ़ापे, बीमारी और निशकत्ता तथा अन्य अनर्ह की दशा में लोक सहायता के अधिकार को सुनिश्चित करने हेतु प्रभावी उपबन्ध बना कर कल्याणकारी राज्य, समतावादी समाज व्यवस्था करने के लिए अनुच्छेद 38 और 41 में अन्य उपबन्धों सहित, राज्य की नीति के निदेशक तत्वों का बड़ी बुद्धिमता से प्रावधान किया है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस विकासशील युग में हमारे पुण्यतन सदगुणों का ह्वास हो रहा है और भौतिकवादी और अत्यन्त प्रवृत्तियां पनप रही हैं।

युवा पीढ़ी अपनी पल्ली, सन्तान और वृद्ध तथा अशक्त माता-पिता की उपेक्षा कर रही है वे समाज में रद्दी के ढेर की तरह, कंगाल और दीनहीन बनने पर और तद्द्वारा वे अपना जीवन निर्वाह के लिए वेसहारा, अनौतिक और आपराधिक जीवन जीने को विवश हो रहे हैं। इस लिए उपेक्षित पल्ली सन्तान और वृद्ध तथा अशक्त माता-पिता की कठिनाइयों को दूर करने के लिए सहानुभूतिशील और शीघ्र उपचार का उपबन्ध करना परम आवश्यक हो गया है।

उपर्युक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, राज्य विधान सभा द्वारा, 4 दिसम्बर 1996 को, हिमाचल प्रदेश माता-पिता और आप्रित भरणपोषण विधेयक, 1996 (1996 का 29) पारित किया गया था। तत्पश्चात् विधेयक, राष्ट्रपति की मंजूरी अभि प्राप्त करने के लिए, भारत सरकार गृह मंत्रालय, नई दिल्ली को भेजा गया था। तथापि, भारत सरकार ने निम्नलिखित संप्रेक्षण किए हैं कि:-

(i) भरणपोषण के लिए आदेश पारित करने का प्राधिकार उप-मण्डल अधिकारी (सिविल) को है और उस के आदेश के विरुद्ध अपील मण्डलायुक्त को होगी जिसके आदेश अन्तिम हैं। ये प्रशासनिक प्राधिकरण हैं और ये, वैध उपबन्धों के अधीन, हकदारी के प्रश्नों का विनिश्चय करने के योग्य नहीं होंगे और उन का अवधारण व्यायिक नहीं होगा और इसलिए, न्यायिक प्राधिकारी के समक्ष, कम से कम एक अपील का उपबंध किया जाना चाहिए;

(ii) भरणपोषण भत्ता के संदाय के लिए कोई भी अधिकतम सीमा नियत नहीं की गई है यह कम से कम पांच हजार रूपए प्रतिमास होना चाहिए;

(iii) केवल साठ वर्ष और इस से बाजे व्यक्ति, जब तक वे बीमार या दुर्बल हैं ही, भरणपोषण भत्ता के हकदार हैं; यह संभाव्य है कि इस आयु सीमा से नीचे के व्यक्ति को भी भरणपोषण की आवश्यकता हो सकती है। इस लिए, किसी आयु सीमा हेतु उपबन्ध करना वांछनीय नहीं है

(iv) व्यक्ति या संगठन जो वर्तमानतः वृद्धों और आश्रित व्यक्तियों को रखने के लिए लगे हुए, और अनुमोदित है “अनुमोदित व्यक्ति या संगठन” की परिभाषा में सम्मिलित किए जाएंगे;

(v) हिमाचल प्रदेश माता-पिता और आश्रित भरणपोषण विधेयक वर्ष 1955 और 1956 की चार “हिन्दु” अधिनियमितयों में यथा परिभाषित अभिव्यक्ति का अर्थ के अन्तर्गत निबन्धित किया जा सकेगा;

(vi) अंतरिम भरण पोषण के लिए उपबंध किया जाए।

भारत सरकार के विचारों के दृष्टिगत, राज्य विधान सभा द्वारा, 4 दिसम्बर, 1996 को यथा पारित विधेयक में निम्नलिखित उपान्तरण किए गए हैं—

(i) अधिकरण के 'विनिश्चय के विरुद्ध अपील की सुनवाई हेतु उच्च न्यायालय को राशक्ता किया गया है तथा पुनरीक्षण की शक्तियां राज्य सरकार को प्रत्यायोजित की गई हैं;

(ii) भरणपोषण भत्ते की अधिकृता, सीमा पांच हजार रूपए प्रति मास नियत की गई है;

(iii) भरणपोषण भत्ते के लिए हकदार होने के लिए नियत की गई साठ वर्ष की आयु सीमा छोड़ दी गई है;

(iv) “अनुमोदित व्यक्ति या संगठन” की परिभाषा के, उन व्यक्तियों या संगठनों, जो वृद्ध, दुर्बल और आश्रित व्यक्तियों को रखने या भरणपोषण करने हेतु वर्तमानतः लगे हैं और अनुमोदित हैं को सम्मिलित करने के लिए, पुनः परिभाषित किया गया है;

(v) विधेयक के उपबन्ध, मुसलमानों के सिवाए, हिमाचल प्रदेश के राज्यक्षेत्र में अधिवसित सभी व्यक्तियों को लागू बनाए गए हैं;

(vi) अंतरिम भरणपोषण भत्ते के संदाय के विषय में उपबन्ध बनाए गए हैं।

यह विधेयक उपयुक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए है।

शिमला

.....2001

वित्तीय ज्ञापन

विधेयक का खण्ड 12 और खण्ड 13, माता-पिता और आश्रितों के भरणपोषण के लिए भरणपोषण अधिकार और अधिकरण की नियुक्ति का उपबन्ध करता है। क्योंकि प्रस्तावित उपबन्धों के कार्यान्वयन के लिए विद्यारामान सरकार तन्त्र का उपयोग किया जाना आशयित है, इसलिए इस थापना पर कोई अतिरिक्त व्यय नहीं होगा। अनन्तिम रूप से विधेयक में अन्तर्विष्ट उपबन्धों के अधिनियमित किए जाने पर प्रति वर्ष लगभग तीन लाख रु० का राकजकोष से अतिरिक्त आवर्ती व्यय अन्तर्वलित होगा।

प्रत्यायोजित विधान सम्बन्धी ज्ञापन

खण्ड 22 में उल्लिखित प्रयोजनों के बारे में नियम बनाने के लिए और विधेयक के सभी या किन्ही उपबन्धों को कार्यान्वित करने के प्रयोजन के लिए राज्य सरकार को सशक्त करता है। यह प्रत्यायोजन आवश्यक और सामान्य प्रकृति का है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 207 के अधीन राज्यपाल की सिफारिश

(कल्याण विभाग नरित सं० डब्ल्यू एल एफ-ए (3)
5/96-II)

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश माता-पिता और आश्रित भरणपोषण विधेयक, 2001 की विषयवस्तु के बारे में सूचित किए जाने के पश्चात, भारत के संविधान के अनुच्छेद 207 के अधीन विधेयक को विधान सभा में पुरः स्थापित करने और उस पर विचार करने की सिफारिश करते हैं।

यह विधेयक विधान सभा द्वारा पारित किया गया है।

मैं, एतदद्वारा प्रमाणित करता हूँ कि यह विधेयक भारत के संविधान के अनुच्छेद 199 के अर्थ के अन्तर्गत एक “धन विधेयक” है।

अध्यक्ष।

शिमला—171 004.

दिनांक : 2001

राज्यपाल।

शिमला—171 004.

दिनांक : 2001

Bill No. 11 of 2001

**THE HIMACHAL PRADESH MAINTENANCE OF PARENTS
AND DEPENDANTS BILL , 2001.**

(PASSED AS AMENDED BY THE LEGISLATIVE ASSEMBLY)

A

BILL

to provide for the maintenance of parents , wives and children and for matters connected there with.

Preamble:- WHEREAS tendency to neglect the aged and infirm parents and dependants is increasing day by day and there is apparent need to compel the young generation to perform their moral obligation which they owe to the society in respect of their families and aged and infirm parents , so that they are not left beggared and destituted on the scrap-heap of society and there by driven to life of vagrancy for their subsistence.

AND WHEREAS for the purpose of securing the principles laid down in article 41 read with article 38 of the Constitution of India it is in the public interest that the public assistance in cases of old age, sickness and disablement and in other cases of undeserved want should be secured.

BE it enacted by the Legislative Assembly of Himachal Pradesh in the Fifty- Second Year of the Republic of India , as follows.

1. (1) This Act may be called the Himachal Pradesh Maintenance of Parents and dependants Bill, 2001
Short title, extent application, and commencement.
 - (2) It extends to the whole of Himachal Pradesh
 - (3) It shall apply to all persons domiciled in the territories of Himachal Pradesh except Muslims.
 - (4) It shall come into force on such date as the State Government may , by notification in the Official Gazette, appoint.
2. In this Act, unless the context otherwise requires,—
 - (a) "applicant" includes a person in whose favour a maintenance order has been made under the provisions of this Act;Definition

- (b) "approved per 'n'" or " organisation" means a person or an organisation that has been approved under section 20 by the State Government in writing for the purposes of this Act ; and shall include person or organisation as specified in the Schedule appended to this Act;
- (c) "child" includes as child born out of extra marital relationship , adopted and step child , below the age of 18 years;
- (d) " dependant" includes;
- (i) parents and grand parents , so long as they are unable to maintain them-selves or unable to obtain maintenance in the case of grand parents from their sons and daughters,
 - (ii) wife , so long as she does not re-marry;
 - (iii) son or the son of predeceased son,, so long as he is minor provided and to the extent that he is unable to obtain maincenance in the case of grand son from his father's or mother's estate;
 - (iv) unmarried daughter or unmarried daughter of the predeceased son , so long as she remains unmarried; provided and to the extent that she is unable to obtain maintenance in case of a grand daughter from her father's and mother's estate:
 - (v) widowed daughter; provided that and to the extent that she is unable to obtain maintenance,-
 - (a) from the estate of her husband;
 - (b) from her son or daughter, if any , or his or her estate; or
 - (c) from her father-in law or her grand father or the estate of either of them;
 - (vi) any widow of the son or of the son of the predeceased son, so long as she does not remarry; provided and to the extent that she is unable to obtain maintenance from the estate of her husband or from her son or daughter, if any, or his or her estate; or in the case of a grandson's widow , also from her father-in-law's estate;
 - (vii) son born out of extra marital relationship , so long he remains minor;

- (viii) daughter born out of extra marital relationship , so long she remains minor;
- (e) "Maintenance Officer" means the Maintenance Officer for the maintenance of parents and dependants appointed under section 13;
- (f) " prescribed" means prescribed by rules made under this Act;
- (g) " property" means property of any kind, whether moveable or immovable, tangible or intangible , and includes and rights or interest in such property;
- (h) " respondent " includes a person against whom a maintenance order has been made under the provisions of this Act; and
- (i) " Tribunal" means the Tribunal for the maintenance of parents and dependants established under section 14.

3 (1) Any person who is unable to maintain himself and having income below the level laid down for persons living below the poverty line and is resident in the State of Himachal Pradesh , may apply to the Tribunal for an order,—

- (i) in case of wife , that her husband;
- (ii) in case of minor son or unmarried daughter , that his or her father and where father dead, his or her mother; and
- (iii) in case of dependant (other than a parent, grand parent, wife, minor son or unmarried daughter) if such dependant has not obtained, by testamentary or intestate succession, any share in an estate of his ancestor that the persons who take the share, shall pay him a monthly allowance, not exceeding five thousand rupees per mensem, or any other periodical payment or a lump-sum for his maintenance.

(2) An approved person or organisation in whose care a parent, wife, child or dependant resides may apply to the Tribunal for an order that the respondent shall pay to the approved person or organisation a monthly allowance not exceeding five thousand rupees per mensem, or any other periodical payment or a lump sum for the purposes of defraying the costs and expenses of maintaining that parent, wife, child or a dependant, as the case may be.

(3) Where a parent, wife, child or dependant ceases to be in the care of the approved person or organisation, any part of the monthly allowance, other periodical payment or lump sum remaining after deducting the reasonable cost and expenses of maintaining the parent, wife, child and the dependant shall be held in trust for such parent, wife child and the dependant, as the case may be.

F planation.- For the purposes of this section, a parent is unable to maintain himself, if his total or expected income and other financial sources are inadequate to provide him with basic amenities & basic physical needs including (but not limited to) shelter, food and clothing.

4. A respondent may serve notice in the prescribed form on other persons liable to maintain the applicant joining them as respondents in the action.

5. (1) The Tribunal may make a maintenance order if it considers that is just and equitable that the respondent should maintain the application and that—

- (a) the respondent is able to provide maintenance to the applicant after his own requirements and those of his spouse and his children; and
- (b) the applicant is unable, in spite of efforts on his part, to maintain himself through work or from his property or from any other source.

(2) When ordering maintenance for the benefit of a wife, child or aged or infirm parent, the Tribunal shall have regard to all the circumstances of the case including (but not limited to) the following matters:—

- (a) the financial needs of the applicant, taking into account reasonable expenses for housing and medical costs;
- (b) the income earning capacity, property and other financial resources of the applicant and the manner in which an applicant has spent his saving or dissipated his financial resources;
- (c) any physical or mental disability of the applicant;

- (d) the income, earning capacity, property and other financial resources of the respondent;
- (c) the expenses incurred by the respondent in supporting his spouse or children;
- (f) the contributions and provisions, whether financial or otherwise, which the respondent has made for the maintenance of the applicant ; and
- (g) if the applicant is living separately, whether the applicant is justified in doing so.

(3) When ordering maintenance, if any, for the benefit to a dependant (other than wife, minor son, unmarried daughter and parents) regard shall be had to—

- (a) the net value of the estate of the deceased after providing for the payment of debts;
- (b) the provisions, if any, made under a will of the deceased in respect of the dependant;
- (c) the degree of relation-ship between the two;
- (d) the reasonable wants of the dependant;
- (e) the past relations between the dependant and the deceased;
- (f) the value of the property of the dependant and any income derived from the property or from his or her earnings or from any other source; and
- (g) the number of dependants entitled to maintenance under this Act.

(4) Where there is more than one respondent the Tribunal may apportion the maintenance among the various respondents in such manner as may be just.

(5) The Tribunal shall, before hearing an application under this section refer the differences between the parties to a conciliation officer for mediation between the parties.

6. Where in any proceeding under this act it appears to the Tribunal that the applicant is unable to maintain himself and has no independent income, it may, on the application of the applicant supported by an affidavit, order the respondent to pay to the applicant such sum by way of interim maintenance as, having

regard to the income of the respondent, it may seem to the Tribunal to be reasonable but which shall not be less than Rs. 500/- per month pending the final disposal of the maintenance application.

**Powers of
Tribunal to order
security for
maintenance**

7. (1) A maintenance order may provide for the payment of a monthly allowance not exceeding five thousand rupees per mensum or periodical payment or a lump sum for such period as the Tribunal may determine.

(2) The Tribunal may, in its discretion, when awarding maintenance, order the respondent to secure the whole or any part of it by vesting any property in trustees upon trust to pay the maintenance or part thereof out of the income from that property.

(3) The Tribunal may, in awarding maintenance, order the applicant to—

- (a) deposit such minimum sum as the Tribunal may determine with a bank; or
- (b) purchase an annuity with an insurer with such minimum sum

(4) The Tribunal may, in awarding maintenance, give directions as to the manner or method of payment.

**Duration of orders
for maintenance**

8. (1) Except where an order for maintenance is expressed to be for any shorter period or where a maintenance order has been rescinded, a maintenance order shall expire:—

- (a) if the maintenance was unsecured, on the death of the applicant or the respondent, whichever is the earlier; and
- (b) if the maintenance was secured, on the death of the applicant.

(2) Where a maintenance order was made against more than one respondent, the death of a respondent does not affect the liability of the others to continue paying maintenance to the applicant. The applicant may apply to the Tribunal to re-apportion the liability among the surviving respondents.

**Powers of
Tribunal to vary
orders for
maintenance**

9. (1) The Tribunal may vary or rescind any subsisting order for maintenance, whether secured or unsecured, where it is satisfied that the order was based on any misrepresentation or mistake of fact.

or where there has been any material change in the circumstances of the applicant or respondents or where another person is joined as a respondent.

(2) An application for variation of a maintenance order may be made by—

- (a) the applicant;
- (b) a respondent;
- (c) the Maintenance Officer;
- (d) an approved person or organization referred to in section 3(2); Or
- (e) in respect of secured maintenance , the legal personal representatives of a respondent.

(3) Where a maintenance order was made against more than one respondent or another respondent is joined , the Tribunal may apportion the maintenance upon an application to vary the maintenance order in such manner as it considers just.

Maintenance
payable
under order of
Tribunal to be
alienable

Enforcement of
maintenance
orders

10. Maintenance payable to any person under this Act shall not be assignable or transferable or liable to be attached, sequestered or levied upon for, or in respect of any debt or claim whatsoever.

11. (1) A maintenance order made under this Act shall have the same force and effect as an order passed under Chapter IX of the Code of Criminal Procedure, 1973, and shall be executed in the manner prescribed for the execution of such order by that Code.

(2) An order for maintenance may be executed either by the Tribunal which passed it or by other Tribunal or ordinary court to which it is sent for execution.

(3) In addition to the mode of execution of orders referred to in sub sections (1) and (2) , a maintenance order passed against a person who is in receipt of salary from any State or Central Government or from a local authority or from a Corporation engaged in any trade or industry which is established by a Central or State Government or from a Government company as defined in section 617 of the Companies Act, 1956 may be executed by way of attachment of salary payable to him.

(4) Where the salary is withheld under sub-section (3), the Tribunal, whether the person liable to pay the amount of maintenance, or the employer or the officer disbursing the salary is or is not within the local limits of the Tribunal's jurisdiction, may order that the salary not exceeding one third shall be withheld from such salary by monthly installments as the Tribunal may direct and upon notice of the order such employer or disbursing officer, shall remit to the Tribunal the amount of monthly installments.

(5) Where the attachable portion of such salary is already being withheld and remitted to a Court or a Tribunal in pursuance of a previous and unsatisfied order of attachment, the employer or the disbursing officer shall forthwith return the subsequent order to the Tribunal issuing it with a full statement of all the particulars of the existing attachment.

(6) Every order made under sub-section (3), unless it is returned in accordance with the provisions of sub-section (5), shall without further notice or other process, bind the employer and the employer shall be liable for the sum paid in contravention of the provisions of sub-sections (3), (4) and (5) of this section.

**Application on
behalf of incapacitated
applicants**

12. Where an applicant is unable to make an application under this Act (whether by reason of physical or mental infirmity or for any other reason), such an application may be made on his behalf by—

- (a) any member of his family;
- (b) any person in whose care he resides; or
- (c) any other person whom the applicant has authorised to make such application.
- (d) Maintenance Officer

13 (1) The District Welfare Officer concerned shall be the Maintenance Officer within his territorial jurisdiction for the maintenance of Parents and dependants.

(2) The Maintenance Officer may make an application under this Act on behalf of an applicant or a minor child (whether or not the applicant is able to do so) or represent such applicant in any proceedings or appeal under this Act.

**Maintenance
Officers**

(3) The Maintenance Officer may consult , or direct any of his officers to consult , with the parties concerned in order to assist them to reach agreement by conciliation.

14. (1) For the purpose of exercising the jurisdiction and powers conferred on a Tribunal for Maintenance of Parents and dependants by this Act, Government shall, as soon as may be after the commencement of this Act, establish, in every district, as many Tribunals for Maintenance of Parents and dependants and at such places , as the State Government may by notification specify.

(2) The Presiding Officer who shall not be lower in rank of the Sub-Divisional Officer (Civil) of which Tribunal shall be appointed by the State Government.

(3) The Presiding Officer of the Tribunal shall vacate his office where—

- (a) he resigns; or
- (b) where he has been appointed by virtue of holding any office , he ceases to hold that office.

(4) Where a person ceases to be the Presiding Officer of the Tribunal, the State Government shall , as soon as is reasonably practicable, take steps to fill the vacancy but the existence of any vacancy in the Tribunal shall not invalidate the acts of the Tribunal.

(5) If the Presiding Officer of the Tribunal is for the time being unable to perform the duties of his office , either generally or in relation to any particular proceedings , the State Government may appoint some other person to discharge the duties of the Presiding Officer for any period , not exceeding six months at one time, or as the case may be , in relation to those proceedings ; and a person so appointed shall , during that period or in relation to those proceedings, have the same power as the person in whose place he is appointed.

(6) The Presiding Officer of the Tribunal when and so long as he is serving on the Tribunal shall be deemed to be a public servant within the meaning of the Indian Penal Code and the proceedings of the Tribunal shall be deemed to be judicial proceeding.

Tribunal to hear
and determine
claim

15. (1) The Tribunal shall have jurisdiction to hear and determine in accordance with this Act all applications made under this Act.

(2) The tribunal shall decide every application made to it as expeditiously as possible and ordinarily every application shall be decided within a period of six months reckoned from the date on which such application has been made.

(3) Sittings of the Tribunal shall be held at such places and times as the Presiding Officer of the Tribunal may determine.

(4) Any interested party may be represented before the Tribunal—

(a) by an agent acting without fee, gain, reward or any expectation thereof in any case in which the Tribunal may, at the request of that party and for good reason, permit;

(b) by the Maintenance Officer;

(c) by an approved person or organisation through any of its employees or office holders.

(5) No party to any proceedings before the Tribunal may be represented by an Advocate.

(6) Every summons and notice issued under the hand of the Presiding Officer of the Tribunal to any person shall be served on that person:-

(a) by delivering the summons to the person or to some adult member of his family at his last known place of residence;

(b) by leaving the summons at his usual or last known place of residence or business in an envelope addressed to the person;

- (c) by sending the summons by registered post addressed to the person at his usual or last known place of residence or business; or
 - (d) where the person is a body of persons or a company:-
 - (i) by delivering the summons to the Secretary or other like officer of the body of persons or company at its registered office or principal place of business; or
 - (ii) by sending the summons by registered post addressed to the body of persons or company at its registered office or principal place of business.
- (7) Any summons or notice sent by registered post to any person in accordance with sub-section(6) shall be deemed to be duly served on the person to whom the letter is addressed at the time when the letter would in the ordinary course of post be delivered and in proving service of the summons, it shall be sufficient to prove that the envelope containing the summons was properly addressed, stamped and posted by registered post.
- (8) The Tribunal shall have the following powers:-
- (a) to dismiss frivolous or vexatious claims at a preliminary stage on the basis of the affidavits and other documentary evidence;
 - (b) to summon any person to appear before a Conciliation Officer for the purpose of mediation;
 - (c) to summon any person whom it may consider able to give evidence to attend at the hearing of an application;
 - (d) to examine such person as a witness either on oath or otherwise and to require such person to produce such records, documents or articles as the Tribunal may think necessary for the purpose of the proceedings;

- (e) to allow any person, attending the proceedings any reasonable expenses necessarily incurred by him in so attending to be paid by such party as the Tribunal may determine;
 - (f) to make an order by consent of the parties; and
 - (g) all powers of a Magistrate with regard to the enforcement of attendance of witnesses and hearing evidence on oath.
- (9) Every person examined as a witness by or before the Tribunal, whether on oath or otherwise, shall be legally bound to state the truth and to produce such records, documents or articles as the Tribunal may require.
- (10) The Tribunal may receive as evidence any report, statement, document, information or writer that may, in its opinion, assist it to deal effectively with a dispute, whether or not the same would be otherwise relevant or admissible under the Indian Evidence Act, 1872.
- 1 of 1872
- (11) In proceedings before the Tribunal it shall not be necessary to record the evidence of witnesses at length, but the Tribunal, as the examination of each witness proceeds, shall, record or cause to be recorded, a memorandum of the substance of what a witness deposes, and such memorandum shall be signed by the witness and the Presiding Officer of the Tribunal and shall form part of the record.
- (12) The evidence of any person where such evidence is of a formal character, may be given by affidavit and may, subject to all just exception, be read in evidence in any proceeding before the Tribunal.
- (13) The Tribunal may, if it thinks fit, and shall on the application of any of the parties to the proceedings summon and examine any such person as to the facts contained in his affidavit.

**State Government
may call for
proceedings
of the Tribunal**

16. (1) The State Government either on its own motion or on the application within 14 days of any party aggrieved by a decision of the Tribunal on the ground that it is wrong in law, may call for the proceedings and the grounds of the award and give such order thereon, either by directing a fresh hearing or otherwise, as seems necessary to secure that substantial justice is done.

(2) the powers of revision conferred under this section shall not question the decision of the Tribunal as to the quantum of maintenance awarded or apportioned under this Act.

Appeals

17. (1) Except as provided in this section and section 16 the decision of the Tribunal shall be final.

(2) The applicant, the Maintenance Officer on behalf of the applicant, a respondent, an approved person or organisation or any other affected party may appeal to the High Court from the decision of the Tribunal upon any question of law or of mixed law and fact except in any case where the Tribunal has made the order with the consent of the parties unless it is alleged that the consent was obtained by means of fraud, duress, threat or misrepresentation.

(3) The High Court shall decide every appeal preferred to it as expeditiously as possible.

(4) The procedure governing such appeals under sub-sections (2) and (3) shall be the same as that for appeals from decisions of the District Court to the High Court.

(5) The High Court shall have jurisdiction to hear and determine any such appeal and may confirm, vary or annul the decision of the Tribunal on appeal and make such further or other order on such appeal, whether costs or otherwise, as the High Court may consider fit.

(6) There shall be no further right of appeal from decisions of the High Court.

Costs

18. The costs of:-

- (a) an application under this Act shall be in the discretion of the Tribunal;
- (b) an appeal shall be in the discretion of the High Court hearing the appeal.

Effect of Transfer
of property on
right of
maintenance

19. (1) Where any person who, after the commencement of this Act, has transferred by way of gift or otherwise, his property, subject to the condition that the transferee shall provide the basic amenities and basic physical needs to the transferer and such transferee refuses or fails to provide such amenities and physical needs, the said transfer of the property shall be deemed to have been made by fraud or coercion or under undue influence and shall at the option of the transferer be void.

(2) Where any person has a right to receive maintenance out of an estate and such estate or part thereof is transferred, the right to receive maintenance may be enforced against the transferee if the transferor has notice of the right, or if the transfer is gratuitous but not against the transferee for consideration and without notice of right.

Approved persons
or organisations

20. The State Government may approve:-

- (a) institutions or organisations engaged in social welfare or the representatives thereof;
- (b) persons professionally engaged in promoting the welfare of the family;
- (c) persons working in the field of social welfare; and
- (d) any other persons;

whose association with a Tribunal would enable it to exercise its jurisdiction more effectively in accordance with the purpose of this Act.

Provisions not
to be derogatory
to certain Laws

21. The provisions of this Act shall be in addition to and not in derogation of the provisions of Chapter IX (relating to the order of maintenance of wife, children and parents) of the Code of Criminal Procedure, 1973 and the provisions of any law for the time being in force in respect of a suit or proceeding for maintenance.
- Power to make rules
22. (1) The State Government may, subject to the condition of previous publication make rules for the purpose of carrying into effect the provisions of this Act.
- (2) Without prejudice to the generality of the foregoing power such rules may provide for:-
- (a) regulating and prescribing the procedure to be followed for applications and the conduct of proceedings under this Act;
 - (b) regulating the ways by which particular facts may be proved, all modes in which evidence thereof may be given including but not limited to affidavits;
 - (c) the manner in which frivolous or vexatious claims may be dismissed at a preliminary stage on the basis of the affidavits and other documentary evidence;
 - (d) the discovery of documents and other evidence and public records;
 - (e) the manner and method of payment of maintenance awarded under this Act;
 - (f) the costs of any proceedings under this Act; and
 - (g) the manner in which the purposes for which and conditions subject to which institutions, organisations and other persons may be approved for providing assistance to the Tribunal.

(3) Every rule made under this section by the State Government shall be laid, as soon as may be after it is made, before the State Legislative Assembly, while it is in session, for a total period of fourteen days which may be comprised in one session or two or more successive sessions, and if, before the expiry of the session immediately following the session or the successive session, aforesaid the Assembly agrees in making any modifications in the rule or the Assembly agrees that the rule should not be made, the rule shall thereafter have effect only in such modified form or be of no effect, as the case may be; so, however, that any such modification or annulment shall be without prejudice to the validity of anything previously done under that rule.